संवाद

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

जून 2019 | चेतना से संवेदना तक | पृष्ठ संख्या: 2

गहरी आस्था का प्रतीक गुग्गा मंदिर

गुग्गा जी महाराज का प्रसिद्ध मंदिर।

खाना खाते हैं। खाने में प्याज, लहसुन व हींग नहीं डालते। पूरे गांव के लोग मांस व शराब का सेवन नहीं करते। गुग्गा नवमी के दिनों में बाबा जी के सेवक घर-घर छत्र ले जाकर बाबा जी की वीर गाथाओं का बखान करते हैं। गुग्गा जी की आराधना के लिए गंगा जल, चावल, फूल, दूवा, चंदन तिलक का प्रयोग करते हैं। प्रसाद में रोट व हलवा इनका प्रिय भोग है। गुग्गा नवमी के दिनों में हजारों की संख्या में लोग सुलह मंदिर पहुंचते हैं। कहा जाता है कि इस मंदिर में शारीरिक व मानसिक रोगी, भूत-प्रेत से उपजे कष्टों के रोगी, मंदबुद्धि व मानसिक तनाव से ग्रस्त लोग अपने कष्टों से मुक्ति पाते हैं। इसके साथ ही यह भी मान्यता है कि सर्पदंश से पीड़ित लोग भी यहां पहुंच कर स्वस्थ हो जाते हैं। पूरे प्रदेश व आसपास के राज्यों के लोग प्रतिदिन यहाँ पहुंच कर गुग्गा जी का आशीर्वाद लेकर अपनी मुरादें पूरी करते हैं।

सुजाता देवी

देवभूमि हिमाचल में हजारों देवी-देवताओं के मंदिर हैं। इनमें से एक देवता श्री जाहरवीर गुग्गा छत्री जी महाराज का मंदिर है जो कि कांगड़ा जिला के पालमपुर (सुलह) में स्थित है। कहा जाता है कि यह मंदिर लगभग 250-300 साल पुराना है। यह भी मान्यता है कि इस मंदिर की परिक्रमा करने मात्र से ही लोगों के दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं। गुग्गा जी महाराज का जन्म मूल रूप से राजस्थान के जिला गंगानगर ददरेवा नगरी में पिता जेवर सिंह व माता बाछल के सूर्यवंशी परिवार में हुआ था। इनके जन्म की एक कथा बहुत प्रचलित है। कहा जाता है कि रानी बाछल कभी मां नहीं बन सकती थीं। उन्होंने मां बनने के हर संभव प्रयास किए लेकिन सब व्यर्थ गए। एक दिन रानी बाछल को उनकी दासी ने बताया कि शिव अवतार माने जाने वाले गुरु गोरखनाथ जी पास के नगर में आए हैं। यह बात सुनकर रानी खुश हो गई और सुबह उनके पास जाने की बात अपनी दासी से कही। उनकी सारी बात रानी की जुड़वा बहन काछल ने सुन लीं। काछल ने अपनी बहन बाछल के वस्त्र पहनकर शाम को ही गुरु गोरखनाथ जी के पास पहुंच गई और गुरु जी ने उसे दो पुत्रों का वरदान दिया। रानी बाछल सुबह नहा धोकर तैयार हुई और गुरु जी के पास पहुंच गई। गोरख जी ने रानी को गूगल नामक फल दिया। उस फल का सेवन करने से रानी बाछल गर्भवती हो गई और उनकी कोख से श्री गुग्गा जी ने जन्म लिया। सांपों का विष उतारने के कारण इनको जाहरवीर व जाहरपीर भी कहा जाता है। इनका वाहन नीला घोड़ा है। इस कारण इनको "नीले घोड़े वाला" भी कहते हैं। गुग्गा जी गो सेवक व गो रक्षक माने जाते हैं। उन्होंने अरब आक्रमणकारियों से 11बार युद्ध करके उनको परास्त किया और अफगानिस्तान के बादशाह द्वारा लूटी गई गायों को छुड़ाया। गुग्गा जी ने असुरों का संहार करके लोगों का उद्धार किया। गुग्गा जी का छत्र तक्षकनाग का रूप है और गुग्गा जी स्वयं पदमनाग का अवतार माने जाते हैं। छत्र के कारण इनको छत्रधारी भी कहते हैं। हर साल सावन के महीने में सुलह मंदिर में महाराज जी का छत्र रक्षाबंधन के दिन चढ़ाया जाता है। इसको चढ़ाने के बाद नौ दिनों तक सुलह में मेला लगता है। इसको गुग्गा नवमी के नाम से जाना जाता है। इन दिनों पूरे गांव के लोग नंगे पैर रहते हैं और जमीन पर सोते हैं। सादा

de-layer

संवाद ई-पत्र व अन्य रोचक लेखों के लिए हमारे ब्लॉग पर जाएं:

www.de-layer.blogspot.in

महिलाओं को अधिकार दिला रहा "जागोरी"

शालू राणा

धर्मशाला (रक्कड़) : आजकल अखबारों में महिलाओ के शोषण की खबरें बढ़ रही है । ऐसा ही एक मामला नगरोटा में एक महिला के साथ हुआ। महिलाओं के घरवालों न उसके साथ मारपीट की, साथ ही उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया। महिला के साथ हिंसा इतनी बढ़ गई कि घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया जिसकी वजह से उसे किसी की मदद नहीं मिल पाई। एक दिन वह एक महिला से मिली, जो जागोरी नाम के गैर सरकारी संगठन मे काम करती है। वह औरत उसे अपने गैर सरकारी संगठन मे ले गई, जिसमें वह कार्य करती थी। वह महिला जागोरी मे काम करने वाली अन्य महिलाओं से मिली। गैर सरकारी संगठन मे काम करने वाली महिलाओं के साथ रहकर वह अपने हक के लिए लड़ी। महिलाओं के खिलाफ अपराध दुनिया भर मे बढ़ रहा है। महिलाओं के प्रति बढ़ते हुए अपराध का प्रमुख कारण लैंगिग असमानता है। जागोरी का कार्य गावों मे औरतो के साथ हो रही हिंसक घटनाओं, के बारे में समाज को जागरुक करना है। जागोरी मे कार्य करने वाली महिलाएं लोगों के घरों में जाकर महिलाओं को जागरूक करती हैं। जिन औरतों के पास समय नहीं है या अपने घरेलू कार्य मे उलझी महिलाएं है, उन्हें उनके घर जाकर उनके आधिकारों के प्रति जागरूक करती है। जागोरी में महिलाओं को शिक्षित करने के लिए अभियान को चलाने का लक्ष्य यही है कि औरतें जो बातें अपने घर के लोगों के सामने या पुरुषो के सामने नहीं रख सकती, वह इन अभियानों के द्वारा बताती है।

जहाँ महिलाएं अपने हक के लिए ख़डी होती है, एवं जहाँ उन्हें अकेलापन महसूस नहीं होता है। वहाँ

प्रशिक्षण प्राप्त करती महिलाओं का समूह।

जागोरी मे काम करने वाली महिलाए उनका उत्साह बढ़ाती है। इस अभियान में हर दिन अलग अलग कार्यक्रम किए जाते है।

गैर सरकारी संगठन में उपयोगी कार्य किए जाते है। इसके साथ ही जागोरी में महिलाओं को पूर्ण कृषि उत्पादन की शिक्षा भी दी जाती है। गैर सरकारी संगठन मे किशोर लड़कियो को आत्मविश्वास और अपने हक के लिए लड़ने को शिक्षा दी जाती है , ताकि वह लडकों के सामान शिक्षा प्राप्त कर सके। इसके साथ ही महिलाओं को हिंसा के प्रति जागरूक , घरों के मुद्दों और बालिकाओं की उपेक्षा शारीरिक सुरक्षा महिलाओं के व्यापक मुद्दों के बारे में भी बताया जाता है। जागोरी बहुत पुराना है व इसके 4 ब्लॉक है - काँगड़ा, नगरोटा, धर्मशाला, रैत । जागोरी में लड़कियों को अपने हक के लिए जागरूक किया जाता है।

2 रुपये में मिलेगा छात्राओं को सैनिटरी नैपकिन

सोनिका नेगी

केंद्रीय विश्वविद्यालय के शारदा कन्या छात्रावास धर्मशाला की छात्राओ को माहवारी के समय आने वाली समस्याओं से मुक्ति दिलाने के लिए छात्रावास में 3 अप्रैल को सैनिटरी नैपकिन वेडिंग मशीन लगाई गई। 50 नैपकिन की क्षमता रखने वाली इस मशीन को एटीएम की तरह उपयोग किया जा सकेगा। मशीन में केवल 2,5,10 का सिक्का डाल कर ही नैपकिन निकाले जा सकते है। इस मशीन के इस्तेमाल की प्रकिया बेहद सरल है जिसमें 2 रुपये के सिक्के को मशीन में डाल कर 1 सैनिटरी नैपकिन प्राप्त किया जा सकेगा। नोट का इसमें कोई प्रयोग नही किया जा सकता हैं।

इस मशीन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य छात्रावास में बालिकाओं को माहवारी के दौरान आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखकर समुचित सुविधा प्रदान करना है। दोनों मशीनों का संचालन बिजली के माध्यम से किया जाता है।

नैपकिन को उपयोग करने के बाद नष्ट भी किया जा सकेगा। इसके लिए भष्मक यन्त्र (इंसीनरेटर मशीन)भी लगाई गई है, जिसका जल्द ही प्रयोग किया जाएगा। भष्मक यन्त्र इंसीनरेटर मशीन में एक साथ 50 से अधिक उपयोग किए गए नैपकिन भस्म किए जा सकेंगे।

शारदा कन्यावास की प्रबंधक डा० श्रेया बक्शी का कहना है "हमारे कन्या छात्रावास में सैनिटरी नैपकिन वेडिंग मशीन स्थापित की गई है। यह हर स्कूल आफिस और रेलवे स्टेशन पर उपलब्ध है। जिसमें सिक्का डाल कर सैनिटरी नैपकिन हमें मिल जाता है।"इसके साथ ही वे

छात्रावास में सैनिटरी नैपकिन मशीन

अपने विश्वविद्यालय के उच्चाधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए कहती है "यह प्रस्ताव विश्वविद्यालय के अलग-अलग कैम्पस के लिए भी था, जो की सबसे पहले हमारे कन्यावास में क्रियान्वित किया गया है। आशा है कि हमारे छात्राबास की लड़कियो को इससे बहुत लाभ मिलेगा ।"

पत्रकारिता विभाग की छात्रा दीक्षा कुलश्रेष्ठ का कहना है " पीरियड का कोई निश्चित समय नही होता है, इस स्थिति में हम कभी-भी , किसी भी समय सेनिटरी नैपकिन वेडिंग मशीन से नैपकिन निकाल सकते हैं।"

एमबीए की प्रीति श्रीवास्तव का कहना है कि "यह एक नई पहल है सरकार की उन लड़कियो व महिलाओं के लिए जो इसका इस्तेमाल कर रही है। आज से पहले की लड़कियों को इस बारे में बोलने व इस्तेमाल करने में शर्म आती थी, लेकिन इस मशीन के आने से उनकी शर्म कम हो गई है। इस मशीन के आने से लड़किया आसानी से नैपकिन प्राप्त कर सकेगी।"

शारदा कन्या छात्रावास में वार्षिक समारोह का आयोजन

मोहिनी ठाकुर

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी शारदा कन्या छात्रावास में वार्षिक समारोह 'आवाहन' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय कुलपति महोदय प्रो० कुलदीप चंद अग्निहोत्री जी थे ।

यह कार्यक्रम हर साल होता है जिसमें साल भर की गतिविधियां शामिल होती हैं। इस समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया गया । शुरू में छात्राओं ने सरस्वती वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत की ।

इसके साथ ही छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रदर्शित किए। छात्राओं ने जम्मू-कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक लगभग हर प्रदेश का लोकनृत्य पेश किया। इनमें लाहौल स्पीति लोकनृत्य, पंजाबी लोकनृत्य, लावनी मराठी लोकनृत्य, बालीवुड नृत्य, फ्री स्टाइल नृत्य, राजस्थानी नृत्य, पहाड़ी नाटी, हिमाचल लोकनृत्य, पंजाबी गीत, जम्मू-कश्मीर के लोकगीत आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शित किए ।

इस समारोह में आर्ट गैलेरी लगी थी, जिसमें लड़कियों ने व्यर्थ के सामान से अलग- अलग चीजें बनाई थीं जैसे - फूलदान, पेंटिंग, फोटोबूथ, भागसू वाटर फाल आदि । इसके लिए विजेताओं को पुरस्कार मिला। साथ ही साल भर की गतिविधियों के विजेताओं को इनाम बांटे गए।

इस दौरान प्रतिकुलपति एच. आर. शर्मा, डीन छात्र कल्याण प्रो० रोशन लाल शर्मा, प्रो० बल्देव भाई शर्मा, प्रोवोस्ट प्रो० (डॉ) बी.सी. चौहान व विश्वविद्यालय के अन्य अध्यापकगण मौजूद रहे। अध्यापकों

हेल्पएज इंडिया द्वारा बेसहारा वृद्धजनों को मिला सहारा

करिश्मा कपूर

हेल्पएज इंडिया बुजुर्गों की समस्याओं को आवाज देता है ताकि उन्हें अधिक गरिमापूर्ण जीवन जीने में मदद मिल सके। यह सन 1978 में स्थापित किया गया था। इसका मिशन " वंचित वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल के लिए काम करना और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

हेल्पएज के कार्यक्रम का मूल एक प्रायोजित मोबाइल हेल्थकेयर यूनिट (MHU) है। यह जरूरतमंद बुजुर्गों को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करती है, जबकि एक समुदाय को स्वास्थ्य निवारक सेवा पर शिक्षित करती है।

प्रत्येक एमएचयू में एक डॉक्टर, फार्मासिस्ट और एक सामाजिक कार्यकर्ता होता हैं। 24 राज्यों में 150 से अधिक मोबाइल हेल्थकेयर इकाइयां कार्यरत हैं, जो 2.3 मिलियन बुजुर्गों को मुफ्त उपचार प्रदान करती हैं।

भारत में 62% बुजुर्ग मोतियाबिंद अंधेपन से पीड़ित हैं। उनका भी इलाज करवाया जाता है। सन 1980 के बाद से, इस कार्यक्रम ने 9 लाख से अधिक बुजुर्गों को लाभान्वित किया तथा उनकी दृष्टि और गरिमा को बहाल किया। हजारों बेसहारा बुजुर्ग अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं और उन्हें अपने दैनिक जीवन को सामान्य ढंग से जीने में मदद करते हैं। वर्षों से हेल्पएज इंडिया ने 30,000 से अधिक निराश्रित बुजुर्गों को भोजन, राशन, कपड़े बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और कुछ खर्च की नियमित आपूर्ति प्रदान करके उन्हें सबल प्रदान किया।

हमारे देश में कैंसर के उपचार की बहुत कीमत है और अधिकांश बुजुर्गों को किसी भी प्रकार का चिकित्सा बीमा नहीं दिया जाता है। हेल्पएज इंडिया कई विश्वसनीय और कैंसर अस्पतालों और संगठनों के साथ साझेदारी में कैंसर के रोगियों की बीमारी को समाप्त करने के लिए उपशामक देखभाल प्रदान करता है।

1998 से 99,000 से अधिक रोगियों का उपचार इस संस्था ने किया है। हेल्पएज इंडिया ने पश्चिम बंगाल में पटियाला और गुरदासपुर जैसे पंजाब, तमिलनाडु और कोलकाता में वृध्दों के लिए मॉडल घरों की स्थापना की है। इसके अलावा हेल्पएज ने पूरे भारत मे 60 से अधिक वृध्दाश्रमों का भी उठाया है। हेल्पएज भारत के 21 राज्यों में टोल–फ्री हेल्पलाइन चलाता है। यह संस्था बुजुर्गों की मदद के लिए काम कर रही है। इसके साथ ही यह बुजुर्गों कि देखभाल का काम भी कर रही है। बुजुर्ग लोग किसी भी आपातकालीन स्थिति में हेल्पएज की सहायता ले सकते हैं ।

मान्यताओं की खान है श्री काली द्वार

कामिनी राणा

पंजाब के आठवें सबसे बड़े शहर बटाला के चकरी बाज़ार स्थित प्राचीन कालीद्वारा मंदिर लोगों की आस्थाओं का प्रतीक है। यहाँ पर देवी काली पिण्डी के रूप में स्थित हैं। एक बड़े हिन्दी अखबार को दिए गए साक्षात्कार के दौरान मंदिर के महंत ने दावा किया कि माँ की यह पिण्डी उनके पूर्वजों को लगभग ५०० वर्ष पूर्व एक कुएँ में मिली थी ।

इस मंदिर के साथ कई किवदंतियां भी जुड़ी हुई हैं। ऐसा माना जाता है कि बंटवारे के दौरान बटाला को पकिस्तान में मिलाए जाने की बात चल रही थी। तब यहाँ के लोगों ने देवी काली की आराधना कर के बटाला को भारत में ही रहने देने की मन्नत मांगी जो की पूरी हो गई और बटाला पकिस्तान में मिलने की बजाय भारत का ही हिस्सा बना रहा ।

एक लोककथा के अनुसार महाराजा रणजीत सिंह को जम्मू राज्य पर विजय माँ काली के आशीर्वाद से ही प्राप्त हुई थी। ऐसी मान्यता है कि जो बच्चे तुतलाते हैं या बचपन में जिनकी आँखें कमज़ोर होती हैं उनके माता-पिता यहाँ आकर देवी से उन्हें ठीक करने की विनती करते हैं । जब उनकी मन्नत सफल हो जाती है तब वे माँ के चरणों में चांदी की जीभ तथा आँखें अर्पित करते हैं।

बाटला स्थित काली मंदिर ही माँ का एकमात्र मंदिर है, जहाँ वे अपने शांत स्वरुप में विराजमान हैं। मंदिर में दूर-दूर से आने वाले भक्तों का विश्वास है कि माँ उनकी हर मनोकामना पूर्ण करती हैं और उन्हें यहाँ आकर अभूतपूर्व शान्ति की प्राप्ति होती है ।

हम लोग यहाँ आकर शांति तथा अद्भुत सुख का अनुभव करते हैं। यहाँ के लोगों की इस मंदिर में पूर्ण आस्था है। कहा जाता है कि नवरात्रों के दिनों में इस मंदिर में माता की पूजा की जाए तो उन भक्तों को मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

शिव की नगरी बैजनाथ .....

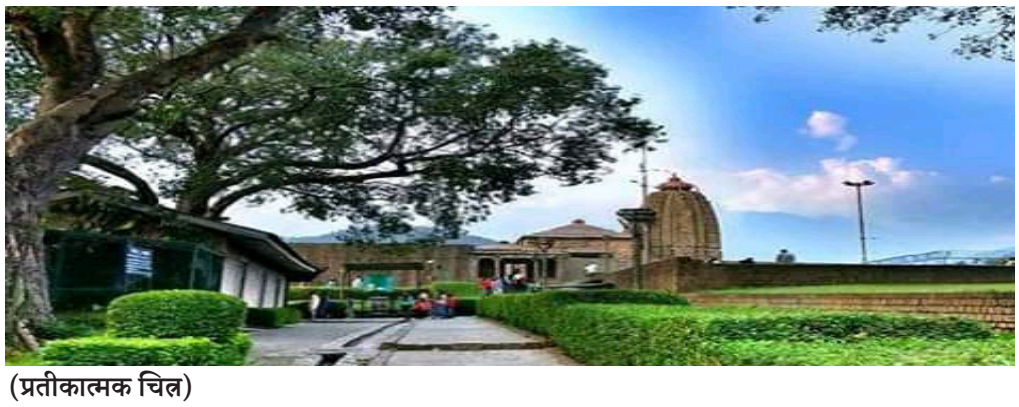

(प्रतीकात्मक चित्र)

मोनिका

बैजनाथ शिव मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के पहाड़ी स्थल पालमपुर में स्थित है। 1204 ई० में दो क्षेत्रीय व्यापारियों ' अदुक और मन्युक' द्वारा इस मंदिर की स्थापना की गई। बैजनाथ तक पहुंचने के लिए दिल्ली से पठानकोट या चंडीगढ़- ऊना होते हुए रेलमार्ग, बस या निजी वाहन व टैक्सी से पहुंचा जा सकता है।

इस मंदिर की यह गाथा है कि रावण ने इस स्थान पर भगवान शिव की तपस्या की थी। जिससे प्रसन्न होकर शिवजी ने उन्हें शिवलिंग प्रदान किया, जिसे रावण लंका ले जाना चाहता था, लेकिन शिवजी की एक शर्त थी कि इस शिव लिंग को बिना विश्राम किए लंका पहुंचाना होगा। शिवलिंग को लंका की ओर लेकर जाते हुए रास्ते में लघुशंका के लिए रावण को रुकना पड़ा, जिसके लिए उसने शिवलिंग एक बैजू नाम के गडरिए को पकड़ा दिया। बैजू ने उस शिवलिंग को पकड़ लिया। बैजू उसे हाथ में रखे-रखे थक गया तो उसने शिवलिंग को नीचे रख दिया। जब रावण वापस आया तो वह उस शिवलिंग को उस स्थान से नही उठा पाया । उसी स्थान पर मंदिर का निर्माण हुआ जिस का नाम बैजू नाम के उस गडरिए के नाम से पड़ा। आज भी इस इलाके में रावण का खास महत्व है। जब पूरे देश में दशहरे पर रावण का दहन किया जाता है। उस समय बैजनाथ में रावण का दहन नहीं किया जाता। मान्यता है कि मंदिर की दीवारों पर बने शिलालेखों को आज तक कोई नही पढ़ पाया। मंदिर की जिम्मेदारी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पास है। जिनके तहत ही मंदिर के आस-पास खूबसूरत उद्यान का निर्माण किया गया है। जिसकी वजह से यह मंदिर आस्था के साथ- साथ पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र भी बन गया है। यहाँ पर हर वर्ष सावन के माह में मेले लगते हैं जिनमे दूर-दूर से लोग माथा टेकने आते हैं।

संवाद टीम

बबिता ठाकुर
ऋतू शर्मा
करिश्मा कपूर
सुजाता देवी
करिश्मा कपूर

मोहिनी ठाकुर
मोनिका
शालू
स्वाति ठाकुर
सोनिका नेगी
कामिनी राणा

कभी भी यह मत सोचो की तुम्हारे लिए या तुम्हारी आत्मा के लिए कुछ भी नामुमकिन है। यह सोच ही सबसे ज्यादा दुखदायी है। अगर कोई पाप है, तो वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने आपको या दूसरों को कमजोर मानना है।

स्वामी विवेकान्द